मार्ग मुक्ति के हम बतलावें * सुनिये इसे खूब मन लाय ॥
शब्द गंध स्पर्श रूप रस * पाँचो विषय महा बल धार ।
पाँच विषय में पाँच शूरमा * जूझत लगे नेक नहिं बार ॥
मीन पतिंगा कुंजर भौंरा * मिरगा पाँच वीर बल दाय ।
एक एक में पाँचौं जूझै * मित्रों सुनिये कान लगाय ॥
मानुष पाँचौं को संग्रह करि * निर्भय सोवत सुधि बिसराय ।
बीतन लागत जब शिर ऊपर * लागे अग्नि कुआँ खुदवाय ॥
खोदि बुझावो आगी जल्दी * मूरख ऐसो करैं उपाय ।
कूप खुदो नहिं अग्नि बुझानी * जरिबरि वस्तु खाक हुइ जाय ॥
मानुष तन को गहो कठिन से * पहुँचे यम दूतन कर जाय ।
कौल कियो थो परमेश्वर से * पूरन कियो न नर तन पाय ॥
तब फिरि संकट चौरासी को * नाना भांति गरासे आय ।
तासे मानुष तन अति उत्तम * जो कुछ बनै सो लेउ बनाय ॥
सच्चे साधू अरु सत धरमी * तिनसे लीजै प्रेम बढ़ाय ।
करहु भजन सतगुरु को सुमरो * संसृति संशय जाय नशाय ॥
सत्य पुरुष अरु सत्य लोक की * आशा करो सदा मन लाय ।
अगम ज्ञान है कायागढ़ को * तुमको सरल रहे बतलाय ॥
बोले आल्हा जैसी आज्ञा * पालन करहुँ बुद्धि अनुसार ।
हमें ज्ञान देउ बाबा पावन * जासे होइ बुद्धि उजियार ॥
नेकु ज्ञान नहिं यहि आल्हा को * जाको मैं प्रभु करउँ गुमान ।
उरकी मेरे सब जानत प्रभु * पूरन करउ गुरू दै ज्ञान ॥
कहौ लड़ाई कायागढ़ की * जेहिमें छुपे वीर समुदाय ।
कैसे युद्ध होइ कायागढ़ * जो पल छिन में देत हराय ॥
पता न पायो काहु भूप ने * तब गोरख ने कही सुनाय ।
नेति नेति कहि वेद हारि गये * खोजन जाय सो जाय हेराय ॥
ऐसो कोट और कहिं दूसर * जग में नाहीं परे दिखाय ।

महाविकट यह कायागढ़ है * जेहिकी रचना कही न जाय ॥
दीन बन्धु प्रभु की दाया से * सूक्ष्म कहत बुद्धि अनुसार ।
अब सुनहु लड़ाई कायागढ़ की * जहँ दिन राति बजी तलवार ॥
जो जो जोधा यहि नगरी में * उनके नाम देउँ बतलाय ।
सतब्रत के समान नहिं ब्रत कोइ * ज्ञान समान दीप कोइ नाय ॥
दया धर्म सम धर्म न दूसर * नहिं विचार सम दूसर सार ।
सुख संतोष समान जगत में * दूसर सुख नहिं परै निहार ॥
पाँच शूर यह मित्र जीव के * मुक्ती पद को करत मिलान ।
अब दुखदायी जो जियरा को * तिनके सुनिये नाम निशान ॥
पाप लोभ सम पाप न दूसर * भारी पाप लोभ परमान ।
तिमिर मोह सम तिमिर न दूसर * अग्नी ना है क्रोध समान ॥
काम बाण सम बाण न दूसर * जाके लगै पार हुइ जाय ।
अहंकार सम पर्वत ऊँचो * भूतल भर में नाहिं लखाय ॥
और रहे सो बरनूँ आगे * इतना यहाँ पर कही सुनाय ।
पाँच स्वर्ग अरु पाँच नर्क को * ऐंचा तानी रहे मचाय ॥
अपने अपने बल पौरुष को * कायागढ़ में रहे दिखाय ।
हार न मानत कोइ काहू से * जैसे जेहिके चलैं उपाय ॥
अब जो बेटा जो जो जिनके * सोऊ सुनिये कान लगाय ।
कायागढ़ के राजा मनु हैं * सब के पिता रहे कहलाय ॥
ताकी तिरिया दुइ सुन्दर अति * जिनके रूप न बरने जाँय ।
नाम निवृत्ती और प्रवृत्ती * दोनहुँ नारि योग्य कहलाँय ॥

* रानी प्रवृत्ती का वंश वर्णन *

झगड़ा सौतिन को सब जानत * जेहि घर एक कंथ दुइ नार ।
नारि प्रवृत्ती मन राजा को * प्यारी लगै सदा सुख सार ॥
यादि भूलि रहे हैं निवृत्ती की * कैसे बसर करत गृह नारि ।
बहुत सुता सुत हैं निवृत्ती के * बहुतक जाये प्रवृत्ती नारि ॥

पर अब सूक्षम मैं वर्णत हौं * आल्हा सुनिये कान लगाय ।
वंश प्रवृत्ती पहिले वर्णौं * पाछे निवृत्ती वंश सुनाय ॥
पुत्र प्रवृत्ती प्रथमै जन्मो * जाको नाम मोह कहलाय ।
बड़ो लड़ैया मोह राज भयो * तेहिसे सकल विश्व भय खाय ॥
मिथ्या नारी मोह राज की * जाको अहंकार सुत खास ।
ममता तिरिया अहंकार की * जादू वशीकरण जेहि पास ॥
यह परिवार मोह को जानौ * अब आगे को करौं बखान ।
दूसर बेटा जो प्रवृत्ती को * उपज्यो काम वीर बलवान ॥
रति है नारी कामदेव की * बेटा लालच जासु उचार ।
लाल पता है बधू तासु की * इतना कामदेव परिवार ॥
लड़िका तीसर जो प्रवृत्ती को * जाको क्रोधसिंह है नाम ।
वाणी उत्कट क्रोधराज की * जाके नैन लाल अभिराम ॥
हिंसा नारी क्रोधराज की * बेटा जासु भयो व्यभिचार ।
नारि भूलकी व्यभिचार बखानी* मुक्ती हेतु विषम तलवार ॥
चौथा बेटा लोभराज है * वाकी तृष्णा नारि सुजान ।
ता सुत पाप नर्क लै जावै * चिन्ता तासु नारि दुख खान ॥
पंचम पुत्र प्रवृत्ती जन्मो * जो जग दम्भ सेन कहलाय ।
आशा नारी दम्भसेन की * सुत पाखंड प्रकट भयो आय ॥
नारि अविद्या वाकी जानौ * जो भूतल पर विकट महान ।
छठवाँ पुत्र गर्व अति भारी * निन्दा नारी ताकी जान ॥
गर्व को बेटा अपयश जन्मो * अरु अप कीरत ताकी नार ।
सप्तम मदवा नारि ईर्षणा * तासे लये विरोध अवतार ॥
परधा नारि विरोध से व्याही * जासे बुद्धी जाय नशाय ।
अष्टम बेटा जो प्रवृत्ती का * अधरम तातु अश्रद्धा नार ॥
सुवन असत भयो है अधरम को * विषय वासना ताकी नार ।
आठ पुत्र परिवार प्रवृत्ती * इतना कीन्हो वंश बखान ॥

गद्दी दीन्हीं मोह नृपति को * बेटा सब लायक अनुमान ।
निरभय राज्य करत कायागढ़ * मन अरु मोह सहित परिवार ॥
वंश प्रवृत्ती का यह बरन्यो * अब निवृत्ती को कहौं उचार ।

* रानी निवृत्ती के वंश का वर्णन *

वंश निवृत्ती का अब सुनिये * जो भ्रम तम को देत नशाय ।
प्रथम पुत्र जन्मो निवृत्ती ने * नाम विवेक गुणी दर्शाय ॥
ताकी रानी ब्रह्म की विद्या * बेटा तासु ज्ञान भयो आय ।
ज्ञान की तिरिया खुशी कहावत * कबहूँ चित्त दुखी होइ नाय ॥
दूसर सुवन निवृत्ती जन्मो * वस्तु विचार नाम तेहि काह ।
निश्चय नारि व पुत्र नेम है * दृढ़ता बन्धु न संशय ताहि ॥
यह परिवार विचार भूप को * निरभय भेदभाव कछु नाँय ।
धीरज पुत्र तीसरो जन्मो * ताकी क्षमा नारि कहलाय ॥
पुत्र आर्जव भयो धीरज को * मुदिता बधू तासु सुखसार ।
चौथो पुत्र निवृत्ती जायो * जो सन्तोष परम सरदार ॥
तृप्त नारि ताको सुत आनंद * करुणा सुत की नारि सुजान ।
सत्य भयो सुत पंचम जाको * नारि साधुता लक्षण मान ॥
सुत निष्कपट नारि जिज्ञासा * इतना कहो तासु परिवार ।
छठवाँ बेटा शील सिंह हैं * लज्जा नारि तासु निष्पाप ॥
सुयश सुवन भयो शीलराय को * कीरति नारि मधुर आलाप ।
सप्तम लड़िका भयो निवृत्ती को * जाको नाम धर्म धुर राय ॥
श्रद्धा नारी धर्म की कहिये * बेटा भयो प्रकाश जग माँय ।
ताकी नारी सत्य वासना * राखै सत्य लोक में जाय ॥
अठवाँ बेटा जो निवृत्ती का * जो वैराग सिंह कहलाय ।
उदासीनता तिनकी रानी * बेटा जासु भयो अभ्यास ॥
नारि निराशा तिनकी कहिये * ता घर दुखको नाहिं निवास ।
आठ पुत्र परिवार निवृत्ती * मुक्ती पद जे रहे मिलाय ॥

यह सब सैना है निवृत्ती की * मित्रों सुनिये कान लगाय।
राजतिलक करि जेठे सुत को * पुनि गद्दी पर दियो बिठाय॥
निपुण सभ्यता में जाहिर है * जाको नाम विवेक कहाय।
आनन्द मंगल के सब भ्राता * निरभय राज करै प्रतिपार॥
रहैं समीप राय के हरदम * बरतैं यथा योग व्योहार।
देखिके आनद यह निवृत्ती का * प्रवृत्ती झुलस २ रहि जाय॥
सौति सुक्ख लखि प्रवृत्ती झरसै * मन में सोचि सोचि रहि जाय।

कुण्डलिया

प्रवृती के मन मांझ में, उपजा कपट विचार।
सौतिन के सुत मार के, भोगूं सुक्ख अपार॥
भोगूं सुक्ख अपार, बात यह मन में ठानी।
करन लगी व्यभिचार, सूझ कछु लाभ न हानी॥
कहत 'विश्वम्भर नाथ', उठी अस मन में कुमती।
निवृती को जय करन हेतु, सोचै मन प्रवृती॥

* प्रवृती का मोह नृपति को बुलाना *

कैसे जीतैं इन बैरिन को * कैसे मरैं सौति सुत हाय।
ऐसी बातैं सोच समुझ के * मोह पुत्र को लियो बुलाय॥
कहै प्रवृत्ती मोह पुत्र से * तुम्हरे जीवै को धिरकार।
वंश बढ़ि गयो है सौतिन को * खटकत मोरे जिया हरबार॥
निशि न नींद वासर नहिं भोजन * दिन अरु रैन हूक दुखदाय।
के तौ मारो इन बैरिन को * कै मुख करिया लेउ कराय॥
ऐसी बातैं सुनि माता की * गरजन लगो मोह नृपराय।
हाथ जोरि कै मोह उचारत * माता कैसी रही सुनाय॥
हमरो बल दुनिया में जाहिर * जेहि को जानत सब संसार।
विषधर सैना मेरी मानी है * जाके बल को नाहिं शुमार॥
इक इक वीर धीर सेना में * जो ब्रह्माण्ड देइँ लौटाय।

वंश नाशि देइँ हम निवृती को * राखैं पानी दिवैया नाँय ॥
मेरे बल से ब्रह्मा विष्णू * कंपै इन्द्रपुरी कैलास ।
मेरी सैना को देखत खन * दुश्मन कोइ न आवत पास ॥
कही हमारी माता मानौ * आज्ञा देउ हमैं हरषाय ।
ऐसी बातैं सुनि माता ने * आज्ञा तुरत दई फरमाय ॥
हुक्म पाय के तब प्रवृती को * अरु चलि दओ मोह हरषाय ।
जाय पहूँचो है द्वारे पर * अरु सेना से कही सुनाय ॥
करौ तयारी समर भूमि की * लागै नेक देर अब नाय ।
हुक्म पाय के मोह नृपति को * सेना साजि पहूँची आय ॥
करिया खंड चली सब सेना * पहुँची समर भूमि में जाय ।
मनसा भूमी कायम करिके * कपट को झंडा दओ गड़ाय ॥

* विवेक राज का खबर पाकर माता के पास जाना *

सुनी खबरिया जब विवेक ने * लाये फौजैं मोह सजाय ।
तब विवेक नृप सोच समुझ के * निज जननी तिर पहुँचे जाय ॥
करि परिक्रमा निज जननी को * सगरो हाल कहो समझाय ।
मोह, क्रोध अरु काम सेन सब * रण में आये सैन सजाय ॥
ऐसी बातैं माता सुनि के * तब विवेक से कही उचार ।
सुमति संगठन बेटा करिके * रण भूमी को होउ तयार ॥
आज्ञा लैके निज जननी से * द्वारे तुरत गरासे आय ।
धौंसा मारो है लश्करि में * अनहद बाजा दये बजाय ॥
कूंच करायो रण भूमी को * परमानन्द सब चलिदै भाय ।
जाय पहूँचे मनसा भूमी * दृढ़ता झण्डा दियो गड़ाय ॥
तब विवेक पूँछत भैय्यन से * भैया सुमति कहौ समुझाय ।
देश काल अनुसार समय की * सुन्दर नीति कहौ समुझाय ॥
कैसे जीतैं इन बैरिन को * जिनके मन में कलह समाय ।
सुनिके बातैं अस राजा की * तब विचार नृप कही सुनाय ॥

दूत पठावौ पहिले अपनो * जो उन्हैं नीति देइ बतलाय ।
कहो न मानै जब समुझाये * तौ रन मुरचा देउ लगाय ॥
कहा मानि के नृप विवेक ने * लीन्हों शील दूत बुलवाय ।
तब विवेक ने कही शील से * मोह नृपति तिर पहुँचो जाय ॥
नीति धर्म को तुम जानत हौ * कहियो भली भांति समझाय ।
हुक्म पाय के शील दूत बनि * चलिदौ हाथ जोरि शिरनाय ॥
घरी पलक के अरसा लागे * पहुँचो शील मोह तिर जाय ।
लगी कचेहरी मोह नृपति की * मानौ असुर रूप दिखलाँय ॥
काम, क्रोध, मद, दंभ, लोभ सब * अरु पाखंड वीर बलवान ।
सबके आगे शील दूत अस * बोल्यो सुनहु मोह गुणवान ॥
चतुरवान अरु बुद्धिवान हौ * काहे रारि बढ़ाई आय ।
आपस में सब भ्राता मिलि के * करौ राज यह रारि मिटाय ॥
पिता आपके अरु विवेक के * एक हैं समुझि सोचिलो भाय ।
तीन लोक के मनु राजा थो * विधि शिव विष्णु सबै उरध्याय ॥
झगड़ा करिहौ जो आपस में * तुमको थूकै सब संसार ।
बहु परतापी मनु राजा थो * नाहीं लड़िका सके सम्भार ॥
आपस में सब झगड़ा करि रहे * सबने फूट लई अपनाय ।
तासे राजन सोच समुझि के * भैय्यन बैर देउ बिसराय ॥
जो नहिं मनिहौ कही हमारी * रण से भली भला है नाय ।
गर्व रहो नहिं केहु नरेश को * हुइगै बड़े बड़े नृपराय ॥
तासे सब मिलि सुमति बांधिके * करिये राज प्रेम दरशाय ।
इतनी बातैं सुनी शील की * गुस्सा गई मोह को आय ॥
कारी पुतरियाँ लालै हुइ गइ * सुर्खी गई देह में छाय ।
धरि के गरजो सिंहासन पर * क्रोध सिंह से कही सुनाय ॥
मारि निकारौ या पाजी को * कैसी बातैं रहो सुनाय ।
हुक्म पाय के क्रोध सिंह ने * शील दूत से कही रिसाय ॥

पिता हमारे मन राजा हैं * हमको दओ अधिकार गहाय।
मोह भूप की रजधानी से * तुम सब कूंच जाउ करवाय॥
कैतौ चुप हुइ घर में बैठौ * अपनो बसर करौ कहुँ जाय।
जो नहिं मनिहौ कही हमारी * तौ हम मुरचा दिहैं लगाय॥
ऐसी बातैं शील दूत से * रिस हुइ कही क्रोध झुंझलाय।
जाय कहौ तुम अपने नृप से * रण चलि खेत जुहारैं आय॥
ऐसी बातैं सुनो क्रोध को * शील राज चलिदै शिरनाय।
जहाँ विवेक राज को बंगला * पहुँचो शील दूत तहँ आय॥
कही हकीकत मोह सभा की * जो कछु कहो क्रोध फरमाय।
जैसी बातैं कही मोह ने * सो सब दीन्हो शील सुनाय॥
बातैं सुनिके शील दूत से * बोले तब विवेक नृप राय।
हुक्म फेरि देउ सब लश्करि में * सगरी फौज लेउ सजवाय॥
खबरि फैलि गइ सब लश्करि में * मारू डंका दओ बजाय।
चली वापसी नृप विवेक की * पहुँची समर भूमि में आय॥
मनसा भूमी दृढ़ करि झण्डा * दीन्हो नृप विवेक गड़वाय।
सुनी खबरिया मोह नृपति ने * आये सौत बन्धु रण माँय॥
होला परि गओ है छाती में * मुरछा गई तुरत ही आय।
तब ललकारो कामसेन ने * कैसी गई उदासी छाय॥
आज्ञा दै देउ यहि सेवक को * रण में कौतुक देउँ दिखाय।
मारि भगावौं हम बैरिन को * साबित लौट एक नहिं जाय॥
इतनी बातैं सुनत मदन की * आज्ञा दई मोह हरषाय।
जावौ भइया समर भूमि में * पल भर देर लगावौ नाय॥
हुक्म पाय के मोह नृपति को * चलि भयो मदन वीर शिरनाय।
संग में नारी रति को लीन्हो * लश्करि कूंच दियो करवाय॥

* कामसेन (मदन) का रण में आना *

सुनहु महातम कामसेन को * जेहिके चले भूमि थर्राय।

देति चपेटा जाके मनसिज * ताकी सुध बुधि जाय हेराय ॥
रद पट फरकत कामदेव के * गुस्सा रही देह में छाय ।
घरी पलक के अरसा लागे * पहुँचो समर भूमि में आय ॥
जहाँ विवेक राय को तम्बू * तहँ पर जाय दीन्ह ललकार ।
लाल लाल दोउ नैना कीन्हें * अरु विवेक से कही उचार ॥
कुशल क्षेम जो अपनी चाहौ * जल्दी कूंच जाउ करवाय ।
नातौ मूल सहित मैं मेटौं * राखौं पानी दिवैया नाय ॥
ऐसी बातैं सुनि मनसिज की * तवहि ज्ञानसिंह कही सुनाय ।
उठिके ठाढ़ो भौ तम्बू में * नृप विवेक से कही सुनाय ॥
सुमति के मालिक संमति करिके * आज्ञा हमैं देउ फरमाय ।
यह अभिमानी कामदेव है * हमकौ चाटक रहो दिखाय ॥
कृपा तुम्हारी से यहि जीतौं * ऐसी कही ज्ञान शिर नाय ।
अरजी सुनिके ज्ञानसिंह की * तब विवेक ने कही सुनाय ॥
जल्दी जाओ देर न लावौ * रण में धूम देउ मचिआय ।
आज्ञा पाकर शीश नवाकर * सजिके ज्ञान समर गौ आय ॥
एक ओर जहँ काम अन्ध है * दूजी ओर ज्ञान गुनराय ।
दगी सलामी दोनौ दल में * फौजें भईं सामने आय ॥
काम तड़प के बोलन लागो * तू नहिं मानो खौफ हमार ।
कही ज्ञान तब हम सब जानत * तू है कायर महा गमांर ॥
अपने मुख से अपनी करनी * बरने शरम लगै है नाय ।
करत बड़ाई अपने मुख से * शोभा तुम्हे देति है नाय ॥
सुनि अस बातैं तिरस्कार की * जरिगौ मदन क्रोध में आय ।
लई कमनिया परमानिक की * अरु समुहें हुइ कही सुनाय ॥
हमने जीतो तीन लोक को * हमकौ कोउ जितैया नाय ।
ब्रह्मा विष्णु और शिव नारद * बेधे इन्द्र अमर पुर जाय ॥
पिता व्यास के जो पाराशर * जिन सम ज्ञानवंत कोउ नाय ।

करी चढ़ाई पाराशर पर * तब तुम नाहीं पड़े दिखाय ॥
ज्ञान विचार विवेक ध्यान सब * भागे एक बाण लगि धाय ।
मोरत योवन सुमुख सयानी * भौंरावत सब जाति लुभाय ॥
कीन्ह चढ़ाई शृङ्गी ऋषि पर * बन में लूटि लीन्ह हम जाय ।
बन में लूटि लओ नारद को * रोये बीच स्वयम्बर माँय ॥
मेरे समुहें यहि दुनिया को * कोई शूर डटन को नाँय ।
कौन वीर तुम मेरे समुहें हौ * ऐसी कही मदन रिस खाय ॥
कितनेउ वार काम ने कीन्हें * दीन्हें ज्ञान ने सबै दुराय ।
फिरि ललकार ज्ञान ने दीन्ही * सम्भरौ कामसेन उमराय ॥
करत बड़ाई तू तिरियन की * कामिनि महा दुक्ख उपजाय ।
अवगुण आठ पतिब्रतनहू में * रावण कहे मन्दोदरि पाय ॥
निन्दित बन्दत नहिं काहू को * जैसा तैसा कहा सुनाय ।
रहित अचार विचार से जानौ * छल बल और कपट अपनाय ॥
चंचल बुद्धि चपलता जाके * भय वश करत अनोखे काम ।
श्रवण नासिका भेद अभंगा * तापर बौरो नर निशि याम ॥
छन में रोवे हँसे ठठावे * छन में मक्कर देति दिखाय ।
ऐसे लक्षण हैं तिरिया में * तासे कौन जीव पतिआय ॥
जो जो बने नारि के चेरे * गड़िगै कुरुक्षेत्र थल जाय ।
माँस सियारन हू नहिं खायो * ऐसे कही ज्ञान समुझाय ॥
ऐसे बचन ज्ञान के सुनिके * गुस्सा गई काम को छाय ।
करन प्रशंसा लागो रति की * नारि रूप तुम जानत नाय ॥
अंडज पिंडज में सब चाहत * नारि रूप पर सबै लुभाय ।
पारवती शिव विष्णु लक्ष्मी * ब्रह्मा सरस्वती अपनाय ॥
बड़ो पदारथ तीन लोक में * कामिन सम नहिं परै दिखाय ।
नैन मिलाये नहिं नारी से * चूमा लियो कपोलन नाँय ॥
संगति करी नाहि कामिन से * ताको जन्म अकारथ जाय ।

ऐसे वार मदन जब कीन्हें * तापर ज्ञान कही समुझाय ॥
नर्क की हंडी व्यास सुवन ने * नारी को कह्यो भागवत माँय ।
करत बड़ाई तेहि कामिन की * जेहि तन चाम माँस कफ छाय ॥
नारी सांपिन सी डसिबे में * बेधत रोम रोम विष झार ।
जियत चबावत है हड्डी लौ * अंतिम देति नरक में डार ॥
नर्क देन हारी है कामिन * वरणन करो जाहि भगवान ।
संगति करतै खन तिरिया की * बल बुधि नसै ज्ञान अरु ध्यान ॥
तिरस्कार सुनिके कामिन को * गरजन लगो काम बलवान ।
रूप बखानत पुनि कामिन को * सुनिये बात हमारी ज्ञान ॥
मृगनैनी के नैन बाण से * सुर नर मुनि सब जात हेराय ।
ध्यान छूटि गओ शंकरजी को * जब मोहनी रूप दर्शाय ॥
इन्द्र अहिल्या के घर घुसिगै * विष्णू वृन्दा के घर जाय ।
पाराशर धीमरि पर मोहे * ब्रह्मा सुता पर गये लुभाय ॥
राम कृष्ण अवतारी हुइ के * तिरियन के संग करे विहार ।
जंघा कदली सम जाके हैं * जोबन कनक कलस उनहार ॥
कीर चोंच सी कही नासिका * दाड़िम दाना दंत बताय ।
चन्द्र बदन हिरनी से नैना * लखि के ज्ञान जाति बिसराय ॥
पुरुष प्रताप जगत निज मानत * नारी पुरुष को देति हराय ।
नारी जाको हित करि निरखै * नैना धसैं करेजे जाय ॥

कुण्डलिया

ऐन काम भौहैं धनुष, नैना हैं दोउ बान ।
निकसत जबै अहेर को, छुटै मुनिन को ध्यान ॥
छुटत मुनिन के ध्यान, नारि जग विजयी जानो ।
हेरत जाकी ओर, बचन को नाहिं ठिकानो ॥
कहत 'विश्वम्भर' मदन जब बोले ऐसे बैन ।
तब फिरि ज्ञान विचारि के लागो उत्तर दैन ॥

ऐसे बाण मदन जब छोड़े * तब फिरि ज्ञान सामने आय।
सत्त सुमरि के मन सदगुरु को * पुनि मनसिज पर कही सुनाय॥
तू क्या जानै आतम सुख को * तेरी पहुँच वहाँ तक नाय।
कामिन के वश रहत सदा तू * तेरा पौरुष नारि कहाय॥
रूप बखानत है निरिया को * मल अरु मूत्र से रही सुहाय।
जो तू निरखै निज स्वरूप को * नारि पुरुष वहँ पर कछु नाय॥
एकाहि ब्रह्म स्वरूप सबन में * दोनहु लिंगन परै लखाय।
वर्ण आश्रम को झगड़ा जो है * देखत रूप लोप हुइ जाय॥
आदि अन्त जहँ मध्य न दीखै * जहँ विस्तार तिहूँ पुर नाय।
जप, तप, संजम, काया, माया * गुरु शिशु ब्रह्म जीव कछु नाँय॥
अच्छर पार निरच्छर सो पद * पाँच तत्व से भिन्न उचार।
अक्षर एक सर्व घट व्यापक * जो है सबको जानन हार॥
एक अनेक अनेक एक फिर * कबहूँ एक अनेक लखाय।
ऐसी संध्या लखै जो कोई * सोई सब यह जानै भाय॥
एक आत्मा सबमें चमकै * तब रति काम करत विस्तार।
निज सरूप के सन्मुख तेरी * आकृति मिटत मृत्यु पदधार॥
भेदाभेद तहाँ कछु नाहीं * कैसे तेरी तहाँ बिसाय।
रूप ज्ञान गुरु शरणागति से * प्राप्ती होत समझ ले भाय॥
निश्चय आतम को मानत जो * तिनको हाल देउँ बतलाय।
जैसे नटवा करै तमाशा * नाना भांति रूप दिखलाय॥
पर जो जानत है नटवा को * ताको नटवा परै लखाय।
ते नहिं भूलत हैं स्वांगन में * नाहीं संग करत भ्रम पाय॥
ऐसेहि ब्रह्म तत्व के ज्ञानी * देखत सबमें ब्रह्म बसाय।
द्वैत नहीं जब इकही दरसै * तब कहु तेरा कौन उपाय॥
बाण अभेद ज्ञान अस छाँड़े * मुरछित काम गिरो भहराय।
मनसिज गिरतै परलय हुइ गइ * रोवत रती गरासी आय॥

तब लौं होश काम को आओ * चरणन परे ज्ञान के जाय ।
धन्य सो तिरिया पतिबरता को * पति के बचन गहै हरषाय ॥
स्वर्ग वासिनी तिनकौ जानौ * सपनेहु आनि पुरुष जग नाँय ।
सुवन सुमज्जन भक्त जासु के * उपजै धन्य नारि कहलाय ॥
यहै बड़ाई है नारिन की * सज्जन सुनिये ध्यान लगाय ।
यहाँ की बातैं यहहीं छूटी * अब आगे को कहौं सुनाय ॥
काम पराजित सुनो मोह ने * हौला परो पेट में जाय ।
खलभल परिगइ है लश्करि में * लागी खबरि क्रोध को आय ॥
लालैं लालैं अँखियाँ हुइ गइँ * चलिदौ क्रोध समर मैदान ।
घरी पलक के अरसा गुजरे * पहुँचो मोह भूप तिर आन ॥
देखि उदासी मोह नृपति की * बोलो तुरत क्रोध शिर नाय ।
बन्धु काम के रन हारे से * काहे धीरज गओ नशाय ॥
आज्ञा दै देउ तुम महराजा * हमरी देखि लेउ तलवार ।
संग में भेजौ हिंसा रानी * जो प्यारी है नारि हमार ॥
हमरे बल कौ तीनि लोक में * चर अरु अचर सुनत घबराय ।
इतनी सुनतै मोह नृपति ने * आज्ञा तुरत दई करवाय ॥
आज्ञा लैके चलो क्रोध तब * पहुँचो समर भूमि में आय ।
क्रोध चढ़ाई सुनी ज्ञान जब * तब विवेक से कही सुनाय ॥

* क्रोध और क्षमा की लड़ाई *

यहु भट भारी क्रोध वीर है * या संग तुम्हरी नाहिं बिसाय ।
क्षमा और सन्तोष वीर को * यासे समर देउ पहुँचाय ॥
हुक्म पाय के तब विवेक ने * गालिब हुक्म दओ करवाय ।
क्षमा और सन्तोष साजि के * पहुँचे समर भूमि में जाय ॥
दगी सलामी दोनौ दल में * रण में मचन लगी घमसान ।
भौ सन्तोष क्रोध को मोहरा * हिंसा क्षमा केर मैदान ॥
धरिके गर्जत क्रोधराज तब * अरु सन्तोष से कहत सुनाय ।

मेरो बल जानत सगरी दुनिया * सुनतै नाम भूमि थर्राय ॥
तितिर बितिर सब राजा करिके * इत उत हमही देत बहाय ।
कबहूँ पहुँचत दुर्वासा पर * सबके दीन्हें मान नशाय ॥
अम्बरीष से बैर करो जब * भागे तीन लोक के माँय ।
सनक सनंदन को हम जीतो * जब दओ श्राप पौरियन जाय ॥
साठि हजार सगर के बेटा * कपिल मुनी दये सबै जराय ।
गुरु वशिष्ठ के शत बेटा थे * हनिदै कौशिक मुनि ने जाय ॥
क्रोध बिना नहिं श्राप लगत है * होवत घात क्रोध बिन नाय ।
क्रोध बिना नहिं शस्त्र उठत है * नहिं बिनु क्रोध युद्ध ठहराय ॥
क्रोधहि को लै शंकर बाबा * परलय करत सकल संसार ।
तासे लौटि जाउ घर अपने * ऐसे कही क्रोध ललकार ॥
हिंसा प्यारी नारि हमारी * जेहि को वार न खाली जाय ।
इतनी बात क्रोध की सुनि के * तब सन्तोष ने कही सुनाय ॥
अम्बरीष सन्तोष करो जब * तब की खबरि दई बिसराय ।
हिरणाकुश पर जब तुम पहुँचे * प्रहलादै पर क्रोध बढ़ाय ॥
तब संतोष कियो प्रहलाद ने * तब की बात दई बिसराय ।
इतनी सुनिके क्रोध वीर तब * हिंसा को दओ हुक्म लगाय ॥
मारि भजावौ यहि पाजी को * कैसी बक बक रहो मचाय ।
हिंसा धावा करिके धाई * उतकै क्षमा पहूँची जाय ॥
बहुत सतायो जब हिंसा ने * चुपके क्षमा क्षमा अपनाय ।
क्रोध क्रोध करि तब छाती में * मारी लात क्षमा के जाय ॥
क्षमा लात सहि तुरतै बोली * तुम्हरे चरण चोट गइ आय ।
मेरी देही अति कठोर है * तुम्हरे चरण कमल कहलाँय ॥
क्षमा कीजिये मेरी गलती * दोनौ चरण रही सहलाय ।
जल सम बचन क्षमा के सुनिके * क्रोध की आगी गई बुताय ॥
क्रोध क्षमा से हारि मानि के * चरणन शीश नवाओ जाय ।

तब मुश्क बांधिके क्रोधसिंह की * हिंसा की लइ कैद कराय ॥
जीति को डंका क्षमा बजाओ * पहुँची नृप विवेक तिर जाय ।
यहाँ माजरा ऐमोहि छोड़त * शैरा आगे कहो बनाय ॥
सुनी खबरिया मोह नृपति ने * हारे काम क्रोध दोउ भाय ।
तुरत बुलाओ दम्भसेन को * अरु यह बात कही झुंझलाय ॥
हुक्म फेरि देउ मेरे लश्करि में * अब मत राखौ देर लगाय ।
फौज हमारी जितनी गढ़ में * सगरी जल्द लेउ सजवाय ॥
हुक्म पायके मोह नृपति को * लश्करि सजि २ पहुँचो आय ।
दंभ, कपट, पाखंड, लोभ सब * साजे सबै छोभ छल लाय ॥
गर्व, अमत अरु बदी, अविद्या * तृष्णा, ताप, दाप व्यभिचार ।
आशा अरु लोलुप्ता निन्दा * इर्ष्या, ममता भई तयार ॥
द्वैत और अपकीरत साजी * मिथ्या, विषय, भूल, तकरार ।
अहंकार, मद, मत्सर, लालच * अधरम, अकरम भये तयार ॥
चिन्ता अरु वंचकता दोनौं * यछा पछी अरु वाद विवाद ।
भय रुज शोक वियोग वीर सब * आलस अरु प्रपंच दुर्वाद ॥
मान, बड़ाई, भ्रष्ट आचरण * धोखा, मोर, तोर, सरदार ।
चित चंचल जीवन दुखदायी * अरु चपलता भई तयार ॥
यह सब सैना मोह नृपति की * साथहि मोह निशा भ्रम ज्वान ।
कूंच कर दियो रण भूमी को * अगुआ कार मोह बलवान ॥
जिनके चलिबे में महि डोलै * देवता छुपे कंदरन आन ।
ऋषि मुनि सकुचे मन अपने में * अब्रधौं कहा करै भगवान ॥
हुमकति आवत है सब सैना * दोहैं बैरी अभै नशाय ।
जाय पहूँचे रण भूमी में * अरु ललकार दीन्ह तहँ जाय ॥
कौन शूरमा जग में जन्मो * बाँधे काम क्रोध मेरे भाय ।
सो अब समुहें परै हमारे * नहिं तौ रण से जाय पराय ॥
सुनि ललकार ज्ञान आगे बढ़ि * तब विवेक से कही सुनाय ।

सब दल आ ओ मोह नृपति को * रण में मरन पहूँचे आय ॥
हुक्म हमारो अब गालिब है * साजै सकल शूर अरु ज्वान ।
हुक्म पाय के सजे शूरमा * सत संतोष शील अरु ज्ञान ॥
आनंद धरम विचार धीर दृढ़ * अरु अभ्यास सुजस वैराग ।
ब्रह्म सुविद्या श्रद्धा रानी * और निराशा शान्ती त्याग ॥
सुविधा तृप्ति और जिज्ञासा * निश्चय करुणा मुक्ति अधार ।
मुदिता उदासीन पुनि समता * क्षमा साधुता अटल बहार ॥
प्रेम भाव अरु भक्ति नम्रता * आज्ञा शीश गुरू व्रत साथ ।
दम सम आस्तिक संयम वुद्धी * जप तप शौच नेम सब साथ ॥
तेज दक्षता अरु जानिवता * आकर्षण अरु आतम ज्ञान ।
कहमी गहनी सहमी रहनी * अरु अद्वैत सुमत सुख खान ॥
नृप विवेक सुखकंद आदि सब * परमानन्द वीर सुखदाय ।
साजे शूर विवेक राज के * देखत ब्रह्म लोक हरषाय ॥
कूंच करायो रण भूमी को * पहुँचे घरी पलक सरदार ।
दगी सलामी दोनौ दल में * रण के होन लगे व्योहार ॥
रही न देरी है लड़िबे की * ज्यादा को अब करै बखान ।
बरनी बरनी को मोहरा है * देखौ हृदय मांहि धरि ध्यान ॥
कठिन लड़ाई कायागढ़ की * जहँ पर मारा मारु सुनाय ।
आठ पहर को परो झमेला * कोई शूर न टारै पाँय ॥
देखि अराबा रण बाघन को * मोह नृपति अस कही सुनाय ।
बातन बातन जीति न हुइहैं * बातन किला मिलन को नाय ॥
बिन पूंजी नहिं साहु कहावै * बिना ज्ञान झूठो सम्वाद ।
जैसे चोकर के लुडुअन को * खाये नाही मिलत सुस्वाद ॥
देश भरे में अगल तुम्हारे * गुजरत घरी घरी पर वार ।
मरना जीना दुख सुख तजिके * करिये युद्ध धारि तलवार ॥
सोई जीतै कायागढ़ को * जीवन मोह जो मानै नाय ।

दोउ ओर भइ हुमसा हुमसी * अब रण धीर धरत कोउ नाय ॥
मते सिपाही कायागढ़ के * शंका जिन्हे काल की नाय ।
मोह विवेक राज को मोहरा * उत संतोष लोभ भिड़ि जाय ॥
मोह अविद्या वार चलाये * उत विवेक करि ज्ञान महान ।
रती लोप भइ भूमण्डल से * मानौ उदय भयो नभ भान ॥
लोभ दिखायो लोभ बहुत कुछ * पर सन्तोष कीन्ह इन्कार ।
तीन लोक में जो कछु कहिये * सो सब कीन्हे लोभ अगार ॥
दस अरु बीस पचास आदि की * चाहत उदय अस्तको सुखसार ।
तेरे वश में जो नर परि जाय * वहि वहि मरत बैल अनुहार ॥
अंत समय कछु संग न जावै * ऐसो निश्चय करो विचार ।
ज्यादा बातैं कौन बढ़ावै * ज्यादा कौन करै तकरार ॥
जानकार अस सुजन सुसंगी * तिनका सैन वैन का ध्यान ।
तासे हार जीत अब देखौ * दोनौ दल को करौं बयान ॥
शिव विरंचि सनकादिक नारद * शारद शेष न पावत पार ।
कठिन साबका कायागढ़ को * आठौ पहर बजै तलवार ॥
संगम हुइगौ दोनौं दल को * छूटन लगे वार पर वार ।
भिड़े सिपाही क्रोधित हुइ के * निज निज योग यथा उनहार ॥
जीतो अविद्या को विद्या ने * पुनि अद्वैत द्वैत जय पाय ।
सुमति कुमति को धरिके पटको * ऊपर परी चोट अरराय ॥
झूठ सत्य से हारि मानि के * चरणन शीश नाइदौ जाय ।
कीरति जीतो अपकीरत को * पाप को हनो पुण्य ने धाय ॥
शीश निराशा को आशा ने * रण में ठाढ़े लओ कटाय ।
चंचलता पर तब दृढ़ता ने * अपनो दीन्हो दाँव चलाय ॥
पुनि वैराग राग को पल में * रण में मुश्क लई बँधवाय ।
नेम और अभ्यास के आगे * विषय वासना जूझी आय ॥
आठ पहर के कठिन युद्ध में * कायर भजे प्रान भय खाय ।

भजे सिपाही मोह राज के * आंखिन आगे परो जनाय ॥
नजर बदलिगइ मोह नृपति की * यह गति देखि गये घबराय ।
तब ललकारो मोह नृपनि ने * अरु विवेक से कही सुनाय ॥
हम तुम लड़िहैं अब खेतन में * दुइमें एकु आँक रहि जाय ।
मनै आइ गइ नृप विवेक के * फिर यह बात कही समझाय ॥
वार आपुनो पहिले करि लेउ * मन की हौंस लेउ निपटाय ।
इतनी सुनिके मोह नृपति तब * समुहें वार चलाओ जाय ॥
बिना मोह की यहि दुनिया में * मोरी नजर परत कोउ नाय ।
कोइ कोइ मोहे रंग तान में * कोइ नैनन में गये हिराय ॥
कोइ कोइ मोहे हैं नाते में * कोई वाणी सुनि रहे लुभाय ।
पशु अरु पक्षी मोह के कारण * बच्चा पालत मोह बढ़ाय ॥
एक दूसरे के वश मोहे * न्यारो कौन कहै समुझाय ।
मोह के फन्दा में हम फांसे * जितने जीव जगत के माँय ॥
कौन शूरमा जग में उपजो * जो यह मोह जाल बिनसाय ।
इतनी सुनिके नृप विवेक ने * उत्तर दीन्हो नम्र सुभाय ॥
जो तुम कही सत्य सब मानत * पर अब सहो हमारो वार ।
यह सब बातैं हैं काया में * काया माया में परिवार ॥
जहाँ विवेक मोह तहँ कैसा * देखत भिन्न भिन्न विस्तार ।
जल क्षिति पावक की काया है * वायू व्योम लिया तनधार ॥
पाँच तत्व गुण तीन के अन्दर * सो सब मायाकृत परिवार ।
रहत विवेकी इनसे न्यारे * बरतत यथा योग व्यवहार ॥
करत बसेरा रवि मण्डल में * मोहत किसी चीज में नांय ।
रहत विवेकी जग में ऐसे * जल बिच कमल रूप दर्शाय ॥
ऐसी बातैं सुनि विवेक की * उत्तर दीन्ह मोह बलवान ।
नृप विवेक के सत्य वार में * हारे मोहराज के बान ॥
मोह के बँधते परलै हुइ गइ * सब की हिम्मत गई हिराय ।

बीनि बीनि के नृप विवेक ने * सब की कैद लई करवाय ॥
जीति के बाजन बाजन लागे * होवन लगे मंगला चार ।
चलिदौ लश्करि नृप विवेक की * पहुँचे अपने महल मझार ॥
करि पैकरमा निज जननी को * बन्दन करो प्रेम से जाय ।
देखि निवृत्ती प्रमुदित हुइ गइ * सबने चरण छुये हरषाय ॥
कुशल क्षेम माता ने पूछी * सबको निजहि पास बिठलाय ।
आशीर्वाद दओ पुत्रन को * सब सुत कीर्तिवान कहलाँय ॥
इतनी कहिके तब निवृती ने * अपने मन में कीन्ह विचार ।
तुरत बुलाओ ब्रह्म विद्या को * और निराशा लई पुकार ॥
जल्दी जाओ मन राजा तिर * अरु यह बात दियो जतलाय ।
बहुत काल लौं प्रवृती के संग * भरमे देश कोश नृपराय ॥
जो कुछ दुख सुख प्रवृती में है * सो कछु तुम्हे छिपो है नाय ।
नीति धर्म तुम सब जानत हौ * तुमसे कहा कहौं समुझाय ॥
दूसर नारी जो निवृती है * ताकी सुरति दई बिसराय ।
पर अब चलिये निवृती के घर * देखौ वहाँ प्रेम नृपराय ॥

सवैया

कहियो पिया मनु से यह जाय के, प्रवृती तजिके निवृती घर आवैं ।
मोह के साथ में क्लेश सहे, अब पुत्र विवेक को कण्ठ लगावैं ॥
वहाँ पाये अनादर क्लेश सहे, अब चेतै नहीं कछु क्लेश उठावैं ।
निवृती के मिलै सुख साँचौ मिलै, 'विश्वम्भर' साँचो संदेश सुनावैं ॥

वीर छन्द

ऐसी बातैं सिखै निवृत्ती * दोनौ दूती दई पठाय ।
घरी पलक के अरसा लागे * पहुँचो मन राजा तिर जाय ॥
नम्र भाव अरु हाथ जोरि के * दोनौ कहन लगीं समुझाय ।
हाथ जोरिके ब्रह्म विद्या ने * मन राजा से कही सुनाय ॥
तजौ अविद्या अहंकार को * हमरे साथ चलौ नृप राय ।
कहत निराशा तजिये आशा * निरभय राज करौ हरषाय ॥

जैसी बातैं कही निवृत्ती * सो सब सबियाँ दई सुनाय ।
सुनिके बातैं यह निवृत्ती की * ठोकर लगी हृदय में जाय ॥
कठिन साबका दुइ पाटन को * साबित अन्न बचन को नाय ।
युगल नारि जेहि नर की होवै * सो वहु जीवित मृतक लखाय ॥
ऐसे सोचत मन राजा जहँ * तहँ पर प्रवृत्ती पहुँची आय ।
हाथ जोर शिर नाय प्रवृत्ती * ऐसे बचन कहै बिलखाय ॥
गाफिल बैठे तुम बंगला मे * रण में भयो वंश संहार ।
काम क्रोध मद मोह आदि सब * सबरे गये समर में हार ॥
लड़िका सौतिन के चढ़ि आये * धीरज धर्म विवेक विचार ।
क्षमा शील सन्तोष आदि ने * सबको डारो कैद मझार ॥
इतनी सुनिके मन राजा को * मुरछा गई तुरत ही आय ।
हाय हाय कर रोवन लागे * मन में बहुत रहे अकुलाय ॥
बहु सुख कीन्हे जिन लड़िकन संग * सो सब रण में गये बँधाय ।
शोकित देखिके ब्रह्म विद्या ने * बुधि अनुसार कही समझाय ॥
इतनी चिन्ता काहे प्रकटी * मिथ्या स्वप्न रूप संसार ।
उलट के देखौ निज स्वरूप को * अरु तत्वन को करौ विचार ॥
को तुम कौन कहाँ से आये * भूले कौन देश में आय ।
देश निवृत्ती को अब चलिये * रहिये स्वतः स्वरूपै माँय ॥
जहाँ पै झगड़ा दुख सुख जगका * सुपनेहुँ कबहूँ नाहि लखाय ।
तीनहु काल स्वतः के माँही * बैठे राज्य करौ नृप राय ॥
पाप पुण्य जहँ निन्दा अस्तुति * नाही नर्क स्वर्ग व्योहार ।
सुनि अस बातैं ब्रह्म विद्या की * मन ने लई मनै निज धार ॥
त्यागन करिके नारि प्रवृत्ती * बनिगौ उदासीन नृप राय ।
साथ निराशा ब्रह्म विद्या के * चलिदौ तुरत भूप हरषाय ॥
शरण निवृत्ती के मन पहुँचो * शरण में भई प्रवृत्ती आय ।
वंश प्रवृत्ती को जो बरणों * सबियाँ भये शरण मे धाय ॥

शरण निवृत्ती के जो रहतीं * सोऊ सुनिये कान लगाय ।
कहन, गहनी, रहनी, सत्तै * सत्तै जहाँ काट दरशाय ॥
सत मिथ्या का निरणय करिके * हरत सार शब्दहि के माँय ।
जहाँ से निरणय सर्व बात की * इतनी सैन समझ लो भाय ॥
दोष अदोष जहाँ कछु नाहीं * जहँ पर अगुण सगुण है नाँय ।
आदि अन्त जहँ मध्य न होवै * जप तप नेम टेम कछु नाँय ॥
पाँच पचीस तीन को झगड़ा * नाहीं छूटि पाव व्योहार ।
कुमति सुमति सुखदुख कछु नाहीं * तीनहु लोक एक उजियार ॥
चौथ लोक अरु मुक्ति लोक * याही सार शब्द विश्राम ।
अमर लोक याही को कहिये * याही परम धाम अभिराम ॥
ऐसी रहनी जहँकी जानौ * इतना कह्यो बुद्धि अनुसार ।
जो यह सार गहत ज्ञानी बनि * सोई सन्त तेज उर धार ॥

कुण्डलिया

लोक लोक परलोक में, जब सुरती विश्राम ।
तब सुधि तन की नहिं रहे, ऐसा है वह धाम ॥
ऐसा है वह धाम बिना सत गुरु नहिं पावै ।
संसृत संशय जाय परम पद माँहि समावै ॥
'विश्वम्भर' पाँच न तीनि जहँ तजै सकल तब शोक ।
मिलै परम पद चुप्प हुइ यही मुक्ति को लोक ॥

वीर छन्द

इतनो ज्ञान दओ गुरु गोरख * हिय धरि सुनो बनाफर राय ।
फिरिके दिव्य दृष्टि गोरख दइ * अरु आल्हा से कही सुनाय ॥
पाप को आगम जो होना है * सो हम तुम्हैं दिहै दिखलाय ।
कर्म कुकर्म करे पिरथी ने * जो कछु भोगै अपजस पाय ॥
योग दृष्टि दइ तुम दोउन को * उनकी दशा देति दिखलाय ।
दशा अजस की अब तुम हेरौ * इन्दल सहित बनाफर राय ॥
पुड़िया मारी गुरु गोरख ने * नैना बन्द दये करवाय ।
फिरि के बोले गोरख स्वामी * देखौ चरित बनाफर राय ॥

पृथ्वीराज के कर्मन को फल * दिल्ली चढ़ैं तुरत उमगाय ।
दुइ वर्षन के भीतर भीतर * दिल्ली ईंट गूंट हुइ जाय ॥
कैदी हुइहैं पृथ्वीराज तब * गजनी शहर पहूँचै जाय ।
कुगति भोग हित बचो पिथौरा * क्षत्री सकल दये निपटाय ॥
नाम तुम्हारो सब दिन रहिहै * आल्हा ग्रन्थ चलै जग माय ।
ठौर ठौर पर गायक हुइहैं * तुम्हरो वीर गान ठहराय ॥
बावन गढ़ को वीर पमारा * छोटे बड़े सुनै चित लाय ।
जो कोइ गइहैं गान तुम्हारो * ताको नाम अल्हैत कहाय ॥
कायर सुनै चरित जब तुम्हरो * सुनतै वीर रूप हुइ जाय ।
जब लौं जल गंगा जमुना में * तब लौं नाम अमर कहलाय ॥
अमर लोक याही को भाखत * याही परमधाम सुख सार ।
ऐसी रहनी यहँ की जानौ * दीन्हो ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
शीश नवाओ सुनिके आल्हा * इन्दल चरण गये लपटाय ।
आशीर्वाद दओ गुरु गोरख * साँचो साधू दओ बनाय ॥
अब खतम लड़ाई कायागढ़ की * रक्षा करैं सदा घनश्याम ।
अब सब सज्जन जाहु भवन निज * निज गृह करौ जाइ विश्राम ॥
दंड प्रणाम यथा विधि सबको * यथा योग सबको लै नाम ।
जाहु देवता मेरे कण्ठ से * निज निज थान करौ विश्राम ॥
हरदोई है जिला हमारो * उमरौली शुभ ग्राम हमार ।
सकल बरन तामें शोभित हैं * निज निज वर्ण गोत्र अनुसार ॥
शाहाबाद तहसील बखानत * 'विश्वम्भर' लघु नाम हमार ।
बरनन कीन्हो कायागढ़ यह * भूल चूक सब लेहु सुधार ॥
प्रथम बार यह आल्हा लिखिके * अपने आप लओ छपवाय ।
अबकी बार कीन्ह संशोधन * फुलवा सती चरित दौ गाय ॥
आगे लड़ाई लिखो तराइन * पदुमा सती नाम मैदान ।
युद्ध आखिरी है आल्हा की * आल्हा ग्रन्थ केर निर्वान ॥

रचयिता—

लेखक—

कविवर श्री विश्वम्भर नाथ 'वाचाल'

उमरौली, हरदोई।

विश्वम्भरनाथ 'वाचाल'